

काबा के मुताबिक चलें दुनिया की घड़ियां

ग्रीनविचमीन टाइम में खामी बताते हुए मक्का को आधार मानकर पूरी दुनिया का टाइम निर्धारण करने की मांग की गई है। दलील यह है कि मक्का पूरी दुनिया के बीचोंबीच है। यह चुम्बकीय उत्तरी और दक्षिणी ध्रुव के ठीक बीच में है और वैज्ञानिक नजरिए से देखा जाए तो टाइम का यही आधार होना चाहिए।



दुनिया में इन दिनों एक नई बहस छिड़ी हुई है। यह बहस है वक्त को लेकर। दुनियाभर के टाइम का आधार बने ग्रीनविचमीन टाइम को चुनौती दी गई है। ग्रीनविचमीन टाइम में खामी बताते हुए मक्का को आधार मानकर पूरी दुनिया का टाइम निर्धारण करने की मांग की गई है। यह मांग जोर पकड़ती जा रही है। दलील यह है कि मक्का पूरी दुनिया के बीचोंबीच है। यह चुम्बकीय उत्तरी और दक्षिणी ध्रुव के ठीक बीच में है और वैज्ञानिक नजरिए से देखा जाए तो टाइम का यही आधार होना चाहिए।

खाड़ी देश कतर में आयोजित एक सेमीनार में यह मांग जोर शोर के साथ उठाई गई। **मक्का**

दी सेन्टर ऑफ दी अर्थ: थ्योरी एण्ड प्रैक्टिस विषय पर आयोजित इस सेमीनार में शामिल मुस्लिम विद्वानों और वैज्ञानिकों ने मक्का को दुनिया का टाइम मानने के पक्ष में कई दलीलें दीं। एक भू वैज्ञानिक की दलील थी कि मक्का शहर का चुम्बकीय उत्तरीय ध्रुव के साथ एकदम सही तालमेल है और मक्का पृथ्वी के ठीक बीच में है। मशहूर मौलवी युसूफ अल करजावी ने बताया कि मॉडर्न साइंस ने इस बात के सुबूत भी उपलब्ध कराए हैं कि मक्का पृथ्वी का वास्तविक केन्द्र है।



इजिप्टियन रिसर्च सेन्टर भी लम्बे टाइम से इस दिशा में काम कर रहा है और उसने इसके पक्ष में कई वैज्ञानिक सुबूत जुटाए

हैं। इजिप्टियन रिसर्च सेन्टर के डॉ. अब्द अल बासेत सैयद इस संबंध में कहते हैं कि जब अंग्रेजों का पूरी दुनिया पर शासन था, तब उन्होंने इंग्लैण्ड के ग्रीनविच शहर के टाइम को मानक



मॉडर्न साइंस ने इस बात के सुबूत उपलब्ध कराए हैं कि मक्का पृथ्वी का वास्तविक केन्द्र है।

मौलवी युसूफ अल करजावी

समय बनाकर पूरी दुनिया पर थोप दिया। डॉ अब्द अल बासेत का कहना है कि ग्रीनविच मीन टाइम में एक बड़ी खामी है यहां चुम्बकीय क्षेत्र होना। यहां चुम्बकीय क्षेत्र होने से ग्रीनविच के उत्तरी और दक्षिणी ध्रुव का समय समान नहीं रहता और समय में साढ़े आठ मिनट का फर्क पड़ जाता है। बासेत का कहना है कि टाइम की इस गड़बड़ी की वजह से एयर ट्राफिक को टाइम संबंधी परेशानी होती है और इनको इन साढ़े आठ मिनट को एडजेस्ट करना पड़ता है।

इजिप्टियन रिसर्च सेन्टर का दावा है कि अगर मक्का शहर को आधार बनाकर टाइम का निर्धारण किया जाए तो समय संबंधी इस परेशानी से बचा जा सकता है। बासेत का कहना कि मक्का का चुम्बकीय क्षेत्र जीरो है क्योंकि वह चुम्बकीय उत्तरी और दक्षिणी ध्रुव के ठीक बीच में है। अगर काबा में कम्पास रखा जाता है तो कम्पास की सुई नहीं हिलेगी क्योंकि वहां से दोनों चुम्बकीय ध्रुव बराबर दूरी पर है। अब्द अल बासेत कहते हैं कि चांद पर जाने वाले नील आर्मस्ट्रॉंग भी मान चुके थे कि काबा दुनिया के बीचोंबीच है। उस वक्त जब अंतरिक्ष से पृथ्वी के फोटो लिए गए थे तो मालूम हुआ कि काबा से खास किस्म की अनंत किरणें निकल रही हैं।

इस मामले में कुछ भूगोलवेत्ताओं का कहना है कि ग्रीनविचमीन टाइम भौगोलिक उत्तर और दक्षिण ध्रुव को आधार बनाकर निश्चित किया गया है, वक्त का ऐसा निर्धारण तो दुनिया के किसी भी हिस्से को आधार बनाकर किया जा सकता था क्योंकि पृथ्वी गोल है और गोल वस्तु के किसी भी बिन्दु को आधार मानकर समय का ऐसा निर्धारण करना आसान है। लेकिन मक्का को समय निर्धारण का आधार मानने के पीछे एक मजबूत दलील है और दलील यह है कि मक्का चुम्बकीय उत्तर और दक्षिण ध्रुवों के ठीक बीच में है। इन भूगोलवेत्ताओं का कहना है कि अन्तरराष्ट्रीय समय निर्धारण का आधार चुम्बकीय ध्रुव होना चाहिए न कि भौगोलिक ध्रुव क्योंकि चुम्बकीय ध्रुव प्राकृतिक है जबकि भौगोलिक ध्रुव मनुष्य ने तय किए हैं।

अब्द अल बासेत के मुताबिक मक्का में चुम्बकीय क्षमता जीरो होने से हज पर जाने वाले लोगों को भी सेहत संबंधी काफी फायदे होते हैं। चुम्बकीय क्षमता जीरो होने से वहां एक खास तरह की ऊर्जा हासिल होती है। जब कोई मक्का में होता है तो उस व्यक्ति के रक्त की ऑक्सीजन ग्रहण

चांद पर जाने वाले नील आर्मस्ट्रॉन्ग भी
मान चुके थे कि काबा दुनिया के
बीचोंबीच है

डॉ. अब्द अल बासेत सैयद
इजिप्टियन रिसर्च सेन्टर



करने की क्षमता दुनिया के अन्य स्थानों से कहीं अधिक होती है। मक्का में अधिक मेहनत करने की जरूरत नहीं पड़ती। यही वजह है कि अच्छी तरह नहीं चल पाने वाला बुजुर्ग व्यक्ति भी हज के दौरान जबर्दस्त भीड़ होने के बावजूद काबा का तवाफ उत्साहित होकर कर लेता है। वहां लोग ऊर्जा से भरे होते हैं क्योंकि वे उस खास मुकाम पर होते हैं, जहां पृथ्वी का चुम्बकीय बल जीरो है।

बासेत आगे बताते हैं-मानव संरचना के बारे में जानकारी रखने वाला व्यक्ति जानता है कि शरीर के सभी प्रवाह दाईं ओर हैं। जब कोई व्यक्ति काबा का तवाफ (परिक्रमा) करता है, जो घड़ी की विपरीत दिशा में यानी दाईं तरफ से बाईं तरफ होता है, तो वह ऊर्जा से भरपूर हो जाता है। तवाफ से शरीर के दाईं ओर के प्रवाह को अधिक गति मिलती है और ऊर्जा हासिल होती है।

इन सब बातों से जाहिर होता है कि ईश्वर ने अपने इस घर को कितना बुलंद मर्तबा अता किया है।

मुहम्मद चाँद

muhammadchand@ymail.com